'इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता की दशा-दिशा और सुरेन्द्र प्रताप सिंह का योगदान'

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशिका

बिभा कुमारी

डॉ० बिभा कुमारी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग

वी०एस०जे० कॉलेज, राजनगर

ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

गवेषक

शिव चन्द्र श्रीवास्तव

शिवचन्द्र श्रीवास्तव

पैट क्रमांक- E2209088

ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. बिभा कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
वी. एस. जे. कॉलेज, राजनगर, मधुबनी

प्रस्तावित शोध-शीर्षक :–

‘इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता की दशा-दिशा और सुरेन्द्र प्रताप सिंह का योगदान’

भूमिका/प्रस्तावना :–

सांस्कृतिक चेतना को नयी त्वरा देने के लिये बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हिन्दी के पत्रकारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समाज-सुधार के दृष्टिकोण से सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लिखा गया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र की पत्रकारिता में भूमिका अलग से रेखांकित करने लायक है। भारतेन्दु के हृदय में राष्ट्र-प्रेम था। तत्कालीन पत्रकार पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करने के लिये और कभी-कभी अखबार में सर्वोच्च कुर्सी पर विराजमान होने के लिये तिकड़म भी करते रहते थे और सत्ता से जुड़े राजनीतिज्ञों का वरउस्तमी चाहते थे। आज भी पत्रकारों के सारे आदर्श और गरिमा धुमिल हो गये हैं। इस सम्बन्ध में एक पटना का जिक्र अप्रासंगिक नहीं होगा। अमृतलाल चक्रवर्ती बम्बई से प्रकाशित एक अखबार के संपादक थे। उस अखबार में नहीं छापने योग्य एक समाचार को उसके मासिक छपवाना चाहते थे। इसके लिये अमृतालाल चक्रवर्ती तैयार नहीं हुये किन्तु मालिक चाहते थे कि वह समाचार छपे ही। तब अमृतलाल चक्रवर्ती ने इस्तीफा दे दिया और मालिक से कहा कि आप मालिक हैं, आप जो समाचार चाहें छापें। चक्रवर्ती जी के त्यागपत्र देने के बाद मालिक ने बालमुकुंड

गुप्त को संपादक बनने के लिये आमंत्रित किया किन्तु उन्होंने यद ठुकरा दिया। यह उस समय का आदर्श था।

आज इक्कीसवीं सदी में हिन्दी पत्रकारों की सुविधायें बढ़ी हैं, पत्रों को नया औरआकर्षक रूप मिला है। जनसंचार के क्षेत्र में आ रही नित नई प्रौद्योगिकी ने आज सूचना क्रांति की स्थिति पैदा कर दी है। यदि हम कहें कि आज हम सूचना-क्रांति के युग में जी रहे हैं तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस सूचना-तकनीक क्रांति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, हर पहलू को किसी-न-किसी रूप में गहरे प्रभावित किया है।

प्रस्तावित शोध-विषय की आवश्यकता :–

प्रस्तावित शोध-विषय पर शोध की आवश्यकता इसीलिये है कि इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता की दशा-दिशा और सुरेन्द्र प्रताप सिंह का योगदान विषय का अनुशीलन अब तक शोध परक दृष्टि से नहीं हुआ है। पत्रकारिता चूंकि समाज और समय को प्रकाशित करती है, इसीलिय इसके भीतरीय तथ्यों का समाज के सुधी पाठकों के समक्ष आना आवश्यक है। इससे एक नवीन साहित्यिक और सामाजिक दृष्टि विकसित हो सकेगी।

प्रस्तावित शोध-विषय का महत्व :–

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता में बदलाव के संकेत बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही मिलने प्रारंभ हो गये थे। इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वाली दुनिया के पाँच

अरब लोगों के पास लगभग एक अरब रेडियो सेट, पचास करोड़ टी०बी० सेट हैं जिन पर करीब तीन हजार रेडियो और टेलीविजन केन्द्रों से कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। एक सौ पचास बड़ी समाचार एजेंसियों और आठ हजार दो सौ दैनिक समाचार-पत्रों की प्रतिदिन छपनेवाली लगभग पैंतालिस करोड़ प्रतियों को देखकर सामान्यात: बुद्धिजीवी संतुष्ट हो सकत है। वास्तविकता यह है कि एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमेरिकी देशों में संचार सुविधा नगण्य है। आढ अफ्रीकी देशों में एक-एक अखबार निकलते हैं। तीन एशियाई और अफ्रीकी देशों ने अभी तक टेलीविजन नहीं देखा है। अठारह अफ्रीकी और सोलह एशियाई देशों में कोई अपनी समाचार एजेंसी नहीं है।

'सूचना साम्राज्यवाद' और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद का मुख्य उद्देश्य पाश्चात्य विचारधारा का पोषण है। प्रसिद्ध पत्रकार डी०आर० मनकेकर ने अपनी पुस्तक 'मीडिया एंड द थर्डवर्ल्ड' में लिखा है कि पश्चिम मीडिया का प्रभाव सर्वत्र है। इसीलिय तंजानिया के पूर्व राष्ट्रपति ज्यूलियस न्येरेरेने एक बार कहा कि विकासशील देशों के निवासियों को अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेने की अनुमति होनी चाहिये। वस्तुत: पश्चिमी मीडिया अपनी बातें विकासशील देशों के मानस में ठोंक-ठोंक कर मरता है। साम्राज्यवादी हितों के अनुरूप समाचारों को तोड़-मरोड़कर प्रसुत किया जाता है।

संप्रति सर्वत्र कम्प्युटर का वर्चस्व है। उद्योग, शिक्षा, यातायात-नियंत्रण, चिकित्सा-सुविधा, चुनाव सम्बन्धी भविष्यवाणियों, मौंसम सम्बन्धी सूचनायें और कानून-

व्यवस्था को अधिक कारगर बनाने में कम्प्यूटर सर्वाधिक सक्षम है। दूरसंचार-व्यवस्था को अधिकाधिक सफल बनाने में इसेक्ट्रॉनिक्स की प्रगति से सम्बद्ध कम्प्यूटर का विशेष हाथ है। पत्रकारिता जगत में अभूतपूर्व क्रांति लाने में इसकी अहम भूमिका है। आज वीडियों पत्र-पत्रिकाओं की धूम मची हुई है। सभी बुद्धिजीवी जगत में वीडियो क्रांति देखी जा रही है। इंडियन बुक हाउस ने वीडियों कैसेट की प्रसार संख्या वाली इस पत्रिका में शूटिंग समाचार, गपशप, अभिनेता-अभिनेत्रियों साक्षात्कार, फिल्मी गाने समाहित हैं। डेढ़ सौ रूपयों वाली इस वीडियों कैसेट का नया अंक बाजार में प्रतिमाह आ जाता है जिसमें प्रचुर विज्ञापन भी होता है।

आज कल अंतरिक्ष की उपलब्धियों पर ही विश्व के उन्नत राष्ट्रगर्व कर रहे हैं। अंतरिक्षयान ही राष्ट्रों की आँख और कान हैं। सन् 1962 में अंतरिक्ष अनुसंधान समिति के गठन के पश्चात अंतरिक्ष के मास पर भारत की सफलता अंकित हुई। थुम्बा भूमध्यरेखीय रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र, निवेन्द्रम् स्थित अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी केन्द्र, अहमदाबाद स्थित प्रायोगिक उपग्रह संचार भू-केन्द्र, आर्यभट्ट, भास्कर प्रथम, प्रथम उपग्रह प्रक्षेपण यान, एपल, भास्कर द्वितीय के कारण भारत विश्व रंगमंच पर प्रदीप्त हुआ। 30 अगस्त को बहुद्देशीय उपग्रह इनसेट–1 बी अमेरिकी अंतरिक्ष पटल चैलेन्जर द्वारा प्रक्षिप्त हुआ जिसने मौसम सम्बन्धी सूचयें दी तथा संचार एवं प्रसारण के क्षेत्र में क्रांति कर दी। इनसेट-1बी, अंतरिक्ष विभाग, दूरसंचार विभाग, मौसम विज्ञान विभाग, आकाशवाणी और दूरदर्शन संगठनों का

संयुक्त उपक्रम है और ये विभाग अपनी आवश्यकताओं हेतु उपग्रह का उपयोग करते हैं। इनमें समन्वय बना रहे, इसीलिये एक उच्च-स्तरीय इनसेट समन्वय समिति बनायी गयी।

04 दिसंबर 1948 को गाजीपुर (उत्तर प्रदेश में जन्मे सुरेन्द्र प्रताप सिंह जिन दिनों बैरकपुर के नेशनल कॉलेज में वाख्याता की नौकरी कर रहे थे उन्हीं दिनों 'दिनपान' मैं एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ। विज्ञापन के अनुसार टाइम्स ऑफ इंडिया समूह को कुछ पत्रकारों की जरूरत थी। सुरेन्द्र ने आवेदन किया, लिखित और साक्षात्कार की परीक्षा पास की और धर्मयुग में प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में नियुक्त होगये।

सुरेन्द्रप्रताप सिंह के आते ही 'धर्मयुग' में क्रांतिकारी परिवर्तन हुये जिस कारण डॉ० धर्मवीर भारती (संपादक) ने उनका स्थानांतरण 'माधुरी' में कर दिया। इन्हीं दिनों सुरेन्द्र का एक आलेख प्रकाशित हुआ- 'खाते हैं हिंदी का, गाते हैं अंग्रेजी का'। यह आलेख डॉ० धर्मवीर भारती पर कटाक्ष था। अतः भारती जी ने उन्हें वापस धर्मयुग में बुला लिया इन्हीं दिनों उनकी भेंट एम०जे० अकबर से हुई। बाद में इस मंडली में दो नामचीन पत्रकार और जुड़ गये- उदयन शर्मा और इसाशंकर गुहा। इस बीच एक और घटनाक्रम हुआ। वह यह कि आनंद बाजार पत्रिका प्रकाशन समूह कलकत्ता से हिंदी साप्ताहिक 'रविवार' का प्रकाशन शुरू हुआ जिसके संपादक सुरेन्द्र प्रताप सिंह बनायेगा। 'रविवार' का प्रकाशन हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महान घटना थी। इसके सामने अन्य पत्रिकाओं की छवि धूमिल पड़ गयी।

सुरेन्द्र प्रताप सिंह के एक दोस्त थे एम० जे० अकबर। उन्हें भाषणों से परहेज था किन्तु जब बोलना ही पड़ जाता तो पत्रकारिता के पेश की पवित्रता हमेशा उनकी जेहन में होती। पत्रकारों की प्रामाणिकता और उनकी पाथमिकताओं की सूची सबसे ऊपर थी। उस समय का आलम यह था कि राजनीति भ्रष्ट हो चुकी थी। अफसरशाही का बोलवाला था। नौकरशाहों ने आतंक मचा रखा था। राजनीति, नौकरशारी और अपराधियों की मिलीभगत से जनता त्रस्त थी। इस बहती गंगा में कुछ पत्रकार भी हाथ घो रहे थे। एक कार्यक्रम में सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा, आज पत्रकारों की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। छोटे शहरों के पत्रकार अब पुलिस वाले होते जा रहे हैं। लोग उनसे डरते हैं। इस इमेज को तोड़ना पड़ेगा। आज पत्रकारिता के जरिये कुछ लोग अपनी हैसियत बनाने में लगे हैं। आज उनमें चारित्रिक गिरावट आई है। यह गिरावट समाज के हर अंग में आयी है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो पत्रकार रहते उसे नेतागिरी करते हैं और नेता बनने के बाद पत्रकारिता। दरअसल पत्रकार कोई देवदूत नहीं होता। उनमें भी बहुत सारे दलाल घुस चुके हैं और सभी सच है कि समाज के बाहर रहकर पत्रकारिता नहीं हो सकता। यर कैसे हो सकता है कि समाज भारत का हो और पत्रकारिता फ्रांस की हो।’

स्पष्ट है कि सुरेन्द्र, प्रताप सिंह की पत्रकारिता, हिन्दी पत्रकारिता का स्वर्णिमकाल था। सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने जिस ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ अपने

पत्रकार-धर्म का निर्वाह किया, वैसा बहुत कम पत्रकार कर पाते हैं। जिस दिन 'उपहार' सिनेमा में आगलगी और लोग उसमें झुलस-झुलस कर मर रहे थे, उसी रात सुरेन्द्र प्रताप सिंह का ब्रेन हैम्ब्रेज हो जाने के कारण 27 जनू 1997 को उनकी मौत हो गयी।

स्पष्ट है 21 वीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता को दशा-दिशा तय करने में सुरेन्द्र प्रताप सिंह की अहम भूमिका रही है। अतः शोध-प्रबंध के रूप में इस विषय का महत्व, इस तथ्य को अलग से रेखांकित करने में है कि किस प्रकार 21 वीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता में अस्य बदलाव हुये और उसकी पृष्ठभूमि के रूप में सुरेन्द्र प्रताप सिंह का क्या योगदान है। अतः प्रस्तावित शोध-शीर्षक को मौलिक माना जा सकता है।

पूर्वकृत शोध :–

1) 'जन आंदोलन में हिन्दी-साप्तहिकों की भूमिका : दिनमान और रविवार को विशेष संदर्भ में', हरिद्वार पांडेय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1992
2) 'जनसंचार-व्यवस्था और मिथक, बट्टीलाा भौख, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली 2002
3) 'राष्ट्रीय चेतना के विकास में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का योगदान', पंकज विमल, हिन्दी विश्वविद्यालय, इंदौर 1993

4) 'आधुनिक जनसंचार के नये आयाम और हिन्दी', सीमा शर्मा, बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, 2009

5) 'इलेक्ट्रिक युग में पत्रकारिता का बदलता स्वरूप', मीनाक्षी, कुरुक्षेत्र, 2007

6) 'जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता', विजय प्रकाश गौतम, खहेलखंड, 2003

7) 'जनसंचार के क्षेत्र में स्थानीय भाषाओं की संप्रेषणीयता', जे० रेणुका, मराठवाड़ा, 2007

8) 'जन संचार माध्यमों में हिन्दी के विविध आयाम', रेशमा बाबुसाबनदफ, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धाखाड़, 2007

9) 'दूरदर्शन की साहित्यिक पत्रकारिता', विजय प्रकाश उपाध्याय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ 2004

10) 'प्रिंट मीडिया में विकास : संचार मीडियाकर्मियों की अवधारणायें', सोनाली नरगुंडे, अहिल्य विश्वविद्यालय, इंदौर, 2006

शाध के आधार-ग्रंथ :–

1) पत्रकारिता का महानायकः सुरेन्द्र प्रताप सिंह, संकलन- संपादन आर० अनुराधा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011

2) ‘संप्रेषणा और रेडियो-शिल्प’, विश्वनाथ पांडेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009

3) ‘फीचर लेखन’, प्रेमनाथ चतुर्वेदी, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2011

4) ‘संचार माध्यमों का हिन्दी पत्रकारिता पर प्रभाव’, विनयशंकर दुबे, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली 2015

5) ‘संचार माध्यम और हिन्दी पत्रकारिता’, विनोद शुक्ल, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2008

प्रस्तावित शोध की परिकल्पना :–

विषय की दृष्टि से शोध-शीर्षक की वैचारिकता द्रष्टव्य है। इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पचकारिता में परिवर्तन की सूचना पूर्व से ही मिलने लगी थी। पूरी दुनिया बदल री थी और विश्व की जनसंख्या का अधिकांश संचार माध्यमों से जुड़कर सूचनायें प्राप्त करने लगा। सूचना क्रांति का सबसे बड़ा आधार काम्प्यूटर और वीडियो क्रांति को माना जाता है। यहाँ तक कि अंतरिक्ष से सूचनायें में एकत्र करने के लिये सैटेलाइट का प्रयोग होने के कारण विश्व के रंगमंच पर प्रतिष्ठित हो गया।

सुरेन्द्र प्रताप सिंह एक मेधावी और ईमानदार पत्रकार थे। उन्होंने पत्रकारिता की मर्यादा की रक्षा के लिये एक नयी दृष्टि विकसित की। उनकी पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान आज की पत्रकारिता के पीछे है।

प्रस्तावित शोध-शीर्षक में शोधार्थी का लक्ष्य इन्हीं तथ्यों को गवेषणापूर्ण दृष्टि से उजागर करने का होगा। अतः यह विश्वास किया जा सकता है संभावित निष्कर्ष सार्थक और उद्देश्यपूर्ण होगा।

प्रस्तावित शोध की प्रविधि :–

सामान्य तौर पर शोध के लिये आगमन और निगमन विधियों का प्रयोग किया जाता है। यह विद्वानों द्वारा भी मान्य है। आगमन-प्रविधि में विशेष से सामान्य की ओर और निगमन-प्रविधि में सामान्य से विशेष की ओर अभिगमन होता है। प्रस्तावित शोध-कार्य में आगमन प्रविधि का मुख्य रूप से सहयोग किमा जायेगा। गौण रूप में निगमन-प्रविधि का सहयोग मीलिया जा सकता है। आगमन-प्रविधि से संचित सामग्रियों का अवलोकन, चयन, विश्लेषण एवं विवेचन कर शोधोयुक्त सामग्री स्वीकृत कर ली जायेगी। शोध-निष्कर्ष को अधिकाधिक प्रामाणिक एवं उपयोतिता प्रदान करने के लिए विशेषज्ञों की रय भी ली जा सकती है।

शोध-अध्यायों का विभाजन :–

पूरोवक्

प्रथम अध्याय : इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता : पृष्ठभूमि में बदलाव के संकेत

द्वितीय अध्याय: इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता : सूचना का साम्राज्यवाद

तृतीय अध्याय : इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता : कम्प्युटर और वीडियो क्रांति

चतुर्थ अध्याय : इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता : अंतरिक्ष अनुसंधान की पत्रकारिता

पंचम अध्याय : इक्कीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता की दशा-दिशा और सुरेन्द्र प्रताप सिंह का योगदान

उपसंहार

प्रस्तावित शोध-ग्रंथों की सूची :–

1) ‘पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य’, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2001

2) ‘पत्रकारिता: इतिहास और प्रश्न’, कृष्णबिहारी मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

3) ‘साहित्यिक पत्रकारिता’, ज्योतिष जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

4) ‘ग्लोबल संस्कृति और मीडिया’, जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिर्शस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2005

5) ‘हिन्दी पत्रकारिता का बृहद, इतिहास’, डॉ० अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

6) ‘जनसंचार माध्यम और विकास’, रमेश तरुण, कला मंदिर, दिल्ली, 2004

7) ‘हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ’, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008

8) ‘संवाद समिति की पत्रकारिता’, काशीनाथ जोगलेकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1991

9) ‘राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता’, डॉ० मीरा रानी बल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005

10) ‘हिन्दी पत्रकारिता’, रामनाथ मिश्र, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2004

11) ‘हिन्दी पत्रकारिता के विविध पक्ष’, रामशरण पांडेय, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 2009

12) ‘हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास और विकास’, आर०के० गुप्ता, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, 2008

13) ‘हिन्दी पत्रकारिता’, कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2004

14) ‘पत्रकारिता : कल, आज और कल’, संतोष कुमार, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, 2008

15) ‘आधुनिक पत्रकारिता’, डॉ० अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010

16) ‘पत्रकारिता के सिद्धांत’, डॉ० रमेशचंद त्रिपाठी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 2010

17) ‘पत्रकारिता और समाज’, संतोष कुमार, ओमेगा पालिकेशन्स, नयी दिल्ली, 2008

18) ‘पत्रकारिता के उत्तर आधुनिक चरण, उपाशंकर चौबे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003

19) ‘मीडिया, शासन और बाजार’, अरविन्द मोहन, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2006

20) ‘आंचलिक संवाददाता’, सुरेश पंडित/मधुकर खेर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1991

21) ‘आधुनिक पत्रकारिता, डॉ० अशोक कुमार शर्मा, डायमंड पॉकेट बुक्स, नयी दिल्ली, 2010

22) ‘भारतीय पत्रकारिता का इतिहास’, जेनटराजन, प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002